Journal of Advances and Scholarly Researches in Allied Education
Vol. 19, Issue No. 2, March-2022, ISSN 2230-7540

समाज की सामाजिक स्थिति और उसका अनुकूलन :कबीर दास के साहित्य में

Lalithamma M.[1]*, Dr. Okendra[2]

[1] Research Scholar, Arunodaya University

[2] Research Supervisor, Arunodaya University

सार - आर्यों के धार्मिक विभाजन केवल हिंदू धर्म, बौद्ध धर्म, जैन और चार्वाक तक ही सीमित नहीं थे, बल्कि 'कुंभर' नाई, धोबी, चमार आदि तक भी फैले हुए थे। नौकरियों, व्यवसायों और आचरण की कई जटिल समस्याओं ने वर्ग निर्माण में बहुत योगदान दिया। विभिन्न प्रकार की 'साधना' भी नई जातियों और वर्गों में विकसित हुई। इस प्रकार, हम देखते हैं कि कबीर के समाज में कई वर्गीकरण थे, समाज धर्म विचार, जाति, आश्रम, धन, पद, नैतिक संहिता और आचरण, जो आने वाली आलोचना से मान्यता बदल गई।

कीवर्ड - कबीर दास, सामाजिक स्थिति, अनुकूलन

----------X----------

परिचय

कई जनजातियों और संस्कृतियों के मिश्रण के साथ, आर्य जाति भेद बेहद सख्त और झूठा दिखावा हो गया। रूढ़िवादी आकार और झूठे शो एक संस्कृति की कमजोरी के निश्चित संकेत हैं। इसके परिणामस्वरूप सामाजिक जीवन का क्रमिक चरणों में विभाजन हुआ। इसने न केवल जातियों के बीच की खाई को चौड़ा किया बल्कि कई अन्य जातियों और उपजातियों को भी जन्म दिया। कबीर के समय जो जाति व्यवस्था की कठोरता थी, उसके बारे में कभी नहीं सोचा गया था कि जाति व्यवस्था कब अस्तित्व में आई।(1)

राग साधना की खोज भले ही सार्थक न हो, लेकिन इसका प्रभाव भागवत पंथ पर पड़ा और बाद में राग साधना का स्वरूप पूरी तरह बदल गया सूफी और वैष्णव संतों और उपदेशकों ने इसे बदलने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। इसकी विधा। सूफियों के 'इस्के हकीकत' ने न केवल 'राग साधना' को रोक दिया बल्कि 'वैष्णव संतों और प्रचारकों' को प्रोत्साहित और प्रेरित किया। उन्होंने 'राग तत्त्व' को 'अनुराग रूप' के रूप में लिया, जो फिर से 'लीला' से संबंधित था, एक धार्मिक पंथ के रूप में इसने शुरुआत में व्यापक लोकप्रियता हासिल की, लेकिन बाद में इसमें कई बुरी प्रथाओं ने प्रवेश किया।

इन दुर्भाग्य और दुखों का मूल कारण आर्यों की बहुत कमजोरी थी जो अपनी रूढ़िवादी जाति व्यवस्था में मौजूद थे। विभिन्न जातियों की बढ़ती तुच्छता और संकीर्ण स्वार्थ ने न केवल विभिन्न जातियों और पंथों को जन्म दिया बल्कि कई जाति भेदों को भी जन्म दिया।

धर्म भेद

निस्संदेह भारतीय धर्म ठोस आधार पर आधारित था। सामाजिक जीवन और सामाजिक मनोविज्ञान से संबंधित इसके घटक तत्वों ने एक ओर तो विचार और भावना की स्वतंत्रता के द्वार खोले लेकिन धर्म के निर्धारित तरीकों पर ध्यान नहीं दिया, यह अंध विश्वास और अंधविश्वास के दलदल में फंस गया और यह शुरू हो गया आजादी के बदले बंधन के लिए इस्तेमाल किया जाए। तो धर्म के विभिन्न रूपों में यह दिखाई देता है, लेकिन इसकी अलग-अलग दिशाएं इसे दोषों से दूर नहीं रख सकीं। समाज को तोड़ने वाले कारणों में ये दोष प्रमुख थे।(2)

कबीर के काल की रूढ़िवादिता उन दोषों में से एक थी जो सामाजिक जीवन को टुकड़े-टुकड़े कर रहे थे। वे जीवन के सामान्य प्रवाह में बाधक थे। आर्य धर्म में गिरावट के संकेत उसी समय दिखाई देने लगे जब बौद्ध और जैन धर्म को एक अलग इकाई विकसित करने की आवश्यकता महसूस हुई, लेकिन इस्लाम के आगमन ने धर्म के वास्तविक आकार को विकृत कर दिया। मुसलमान देश पर राज कर रहे थे। उन्होंने अपने ही धर्म का प्रचार किया है और काफिरों के धर्मों का

www.ignited.in

विनाश किया है। मूर्खतापूर्ण हत्या और भयानक नरसंहार में मुसलमानों ने 'हूणों' को पछाड़ दिया।

हिंदू धर्म और इस्लाम दोनों समान रूप से स्पष्ट रूप से झूठे ढोंग और गलत प्रथाएं थे यदि धर्म की वास्तविकता जेनेया में थी तो वह 'सुन्नता' में भी मौजूद नहीं थी कबीर ने इस धार्मिक कृत्रिमता को बड़े सदमे से देखा और कहा:

"कृतमा सुनीता और जनेऊ,

हिंदू तुरक ना जाने भेद।

मन मुसले की जुगत न जाने,

मति भुलाई द्वै दिन बखानई"।

जनेऊ के पीछे धार्मिक कृत्रिमता मौजूद थी/लेकिन सुन्नत के पीछे धार्मिक कृत्रिमता के साथ यौन हत्या भी थी। धार्मिक शून्यता उस समय/भी मौजूद थी, और यह कबीर जैसे सभी संतों और साधुओं को पता था। जो धर्म सार्वभौमिक नहीं था और जिसे मानव समाज में व्यवहार में नहीं लाया जा सकता था, उसे कबीर से कोई मान्यता नहीं मिली। जिस धर्म का 'निसर्ग' का कोई आधार नहीं है और जिसमें जीवन के लिए कोई प्राकृतिक प्रवृत्ति नहीं है, वह कृत्रिम और झूठा है। धर्म के साथ यह अजीब बात है कि यह पुरुष को प्रभावित करता है, और महिला लोक अछूती रहती है। यदि सुन्नता धर्म की निशानी के रूप में महिलाओं से संबंधित नहीं है, तो निष्पक्ष सेक्स का धार्मिक जीवन परिपूर्ण नहीं हो सकता है, इसलिए सुन्नता और धर्म के बीच संबंध स्थापित करना गलत है। कबीर इन शब्दों में 'सुन्नता' की खुलकर आलोचना करते हैं-:

"सकाती से नेहा पाक करी सुनती,

पादु बंदु रे भाई।

और खादी तुरक कोही क्रता,

आपई कटि किन जय,

हुन तो तुरका किया करी सुन्ती,

औरती सो का कहिये

आराध्या सरिरो नारी न छुटाई,

आधा हिंदू राखिया"।

इस कृत्रिम धर्म के विरोध में कबीर ने निष्कर्ष निकाला कि सुन्नत के अभाव में स्त्री मुसलमान नहीं हो सकती। यदि कोई तुर्क अपनी माँ के गर्भ से पैदा हुई 'तुर्किनी' से 'खताना' के साथ अपना वैवाहिक संबंध स्थापित करता है और यह स्वाभाविक था:

"जे तूना तुरका तुरकणी जया,

तो भितरा खटाना क्यूं न किया।"

इससे स्पष्ट है कि 'तुर्क' धर्म भ्रांति का परिणाम है। मुसलमानों में भी वर्ग भेद मौजूद था, लेकिन यह धर्म से संबंधित नहीं था, 'पीरा', 'मीरा', 'काजी', 'मुल्ला', 'शेखा' आदि मुख्य रूप से पदों के भेद हैं। ये सभी मुसलमान हैं। 'काजी' मुल्ला और 'शेखा' का आचरण और व्यवहार उनके पदों के योग्य नहीं देखकर कबीर उन्हें उनके कर्तव्यों की याद दिलाते हैं और तत्कालीन स्थिति की तस्वीर सामने लाते हैं- :

काजी सो जो काया बिचाराई, तेल दीप में बाती जराई, तेल दीप में बाती रहे, जोती दिनी जे काजी कहे, मुलाना राग देई सुरजानी, आप मुसाला बैठा तानी, आपा में जे करई नयाजा, जो मुलाना सखतरी याज में हाल, सेख सहज पुरुष हल उथवचंदा सुरा बेचारी लावा अर्ध उरधा बिचि आनी उतरा सोई सेखा तिहुं लोक दियारा।(5-3)

एक अन्य 'पद' में कबीर ने 'काजी' और 'मुल्ला' के विषय में अपने विचार इस प्रकार व्यक्त किए हैं:

काजी-:

"काजी सो जो काया बिचारै, अहनीसी ब्रम्ह अगनी प्रजारे

सुनने बिंदा न देई झरना, ता काजी कुन जरा न मारना"

मुल्ला:

"सो मुलाना जो मन सुन लराई,

अहनिसी काल चक्र सूर्य भिरै

काल चक्र का मरदाई मन,

तमुलाना कुन सदा सलामी।"

कबीर के युग को हिंदू और मुसलमानों के बीच एक विशाल अंतर द्वारा चिह्नित किया गया था। इस दरार का मूल कारण धर्म के मतभेद थे। कबीर ने इस भेद को यह कहकर पूह-पूह किया है:

www.ignited.in

"माटी भूले द्वै दीन बखाने"

कबीर ने हिंदुओं और मुसलमानों) हिंदू धर्म और इस्लाम (के बीच व्यापक खाई की ओर संकेत किया है कबीर ने हिंदुओं और मुसलमानों के बीच धार्मिक मतभेदों पर भी प्रकाश डाला है:

"हिंदू तुरक दुहुं नहीं में नेरा"

यहां तक कि मस्जिद और मंदिर भी दोनों धर्मों के बीच व्यापक दरार पैदा कर रहे थे। मस्जिद को सर्वशक्तिमान का निवास मानना और मंदिर को परमात्मा का निवास स्थान मानना भी इस दरार का सहायक कारण था। इस धार्मिक संकीर्णता को जोड़ते हुए उन्होंने कहा है(6)

"अल्लाह आकु मस्ती बसतु है

अवारा मुलकु किसुकेरा।

हिंदू मूर्ति नाम निवास,

दुहमति तातु ना हेरा।"

पंडितों और मुल्लाओं की दिखावटी प्रथाओं में कबीर ने धार्मिक भेदों का दम घोंटते पाया। अत :दोनों की जकड़न से मुक्त होते हुए उसने कहा:

"हमारा झगड़ा रहा न कोऊ,

पंडित मुल्ला दोरे दोय"

कबीर के युग में झूठे धार्मिक प्रदर्शन, सवारी, कृत्रिमता, और रूढ़िवादी कट्टरता ने सभी नागरिक सीमाओं का उल्लंघन करते हुए देखा क्योंकि इस्लाम की कठोर जमीन पर निरंतर अत्याचार पनप रहा था, इसी तरह, हिंदू धर्म के उपजाऊ क्षेत्र में झूठे प्रदर्शन के बीज अंकुरित हो रहे थे। उनकी मोटी वृद्धि ने धर्म की जड़ को कमजोर कर दिया। उन्होंने 'वेद' और अन्य पंथों द्वारा निर्धारित प्रथाओं में कोई सच्चाई नहीं पाई और बेचैन होकर बोले:

"चारी वेद चाहूं मत का बिचार,

इही भ्रामि भूली परवो संसार।"

"सकत वनभान मति मील,

वेसनों मिले चांडाला।

अंक मल दे भेटिये,

मानोन मिले गोपाल"।

एक तरफ ब्राह्मणों और चांडालों के बीच एक चौड़ी खाई थी और दूसरी तरफ वैष्णव प्रचारकों ने सभी के लिए 'भक्ति' का रास्ता खोल दिया। भक्ति आंदोलन के उदय ने ब्राह्मणों और 'शूद्रों' के बीच के भेद को दूर कर दिया। जाति व्यवस्था द्वारा किया गया विभाजन लिंकर था !वैष्णववाद द्वारा फिर से एक साथ। ऐतिहासिक महत्व वाले रामानंद के योगदान को भुलाया नहीं जा सकता। शाक्त पंथ के कारण हिंदू धर्म के विभाजन को कभी भी हमारे दिमाग से बाहर नहीं निकाला जा सकता है। हिंदू समाज में इसके कारण होने वाली जातियों और अनैतिकता के मिश्रण में कबीर का युग भी शामिल था। ब्राह्मण जो जाति व्यवस्था के महान समर्थक थे, उन्होंने 'शक्ति पूजा' (ऊर्जा की देवी (में निचली जातियों की संगति में निषिद्ध भोजन करना शुरू कर दिया(7)

"सकई वरण एकत्रा व्हाई, सकाती पूजा मिली कहिन"

इस बात को साबित करता है"।

साधक

हमने 'कबीर बानी' से यह निष्कर्ष निकाला है कि केवल हिंदुओं और मुसलमानों के बीच ही नहीं, एक व्यापक खाई थी। लेकिन ब्राह्मणों और गैर-ब्राह्मणों के बीच भी। यह खाई कबीर काल में साधना के क्षेत्र में भी मौजूद थी। अनगिनत पंथों, सिद्धांतों और प्रणालियों के साथ। साधना ने असंख्य रूप धारण कर लिए थे। साधना के माध्यम से किसी भी फैशन या वेश से कोई लेना-देना नहीं था, फिर भी साधना पंथ के तत्कालीन अनुयायियों ने अपने लिए एक विशेष अलग वेश का उपयोग किया।

मध्ययुगीन काल में, इस पंथ के अनुयायी न केवल अपने साधना के तरीकों में भिन्न थे, बल्कि वे अपने वेश, भोजन, जीवन शैली और विचार प्रणाली में भी एक दूसरे से भिन्न थे। मुस्लिम समुदाय में कोई असमानता नहीं थी, लेकिन हिंदू समुदाय के अलग-अलग विभाजन थे। इन विभाजनों ने तत्कालीन सामाजिक शक्ति को काफी कमजोर कर दिया था। हिंदू समुदाय जातियों और पंथों और संप्रदायों के भेद ने राष्ट्रीय एकता की भावना को बुरी तरह से चकनाचूर कर दिया था। सांप्रदायिक कट्टरता ने लोगों के सामाजिक मनोबल और ताकत को तोड़ा था। इस कमजोरी ने विदेशी आक्रमण को काफी हद तक प्रोत्साहित किया। साधना के अनुयायियों ने अपने दृष्टिकोण में व्यक्तिवादी होने के कारण सामाजिक एकता को तोड़ा था। एक तरफ तो अलग-अलग संप्रदाय अपनी-अपनी डोर पर भौंक रहे थे, तो दूसरी तरफ व्यक्तिगत कुंठाएं सामाजिक कुरीतियों को प्रेरित और प्रोत्साहित कर रही थीं।(8)

www.ignited.in

सूफी संतों ने हिंदुओं और मुसलमानों के बीच के भेद को दूर करने में कुछ सेवा की, लेकिन वे उन्हें अपने धार्मिक उपदेशों से मुक्त नहीं कर सके, बेशक 'सांता' पंथ ने सामाजिक एकता लाने के लिए ऐतिहासिक महत्व का प्रयास किया। इसमें सबसे बड़ी भूमिका कबीर ने निभाई थी। संत धार्मिक उपदेशों से दूर रहे और उनका उद्देश्य सामाजिक सुधार था। इसलिए उन्होंने सामाजिक कमजोरियों को मिटाने के लिए अपने प्रहार का लक्ष्य रखा। कबीर की आलोचना इस प्रवृत्ति को स्पष्ट रूप से दर्शाती है।

कबीर के काल में शूद्रों में तेजी से बढ़ने वाली कई उपजातियाँ पूरी तरह से स्थापित हो गईं। किसी समुदाय के किसी भी सम्मानित व्यक्ति ने उसे समुदाय से भी ऊंचा स्थान दिया। धीरे-धीरे श्रेष्ठता की यह भावना उनके समुदाय से उनके सारे संबंध काट देती थी और वे नई जाति के अग्रदूत बन जाते थे। जनसंख्या की वृद्धि और धार्मिक पंथों की संख्या ने जाति भेद में बहुत कुछ जोड़ा। इससे बौद्ध, जैन, शैव, वैष्णव और शाक्तों के वर्ग उत्पन्न हुए। धर्म प्रचारकों के शिष्यों ने भी जाति निर्माण में बहुत योगदान दिया।

जाति निर्माण के मुख्य कारक मध्ययुगीन काल में धार्मिक संप्रदायों में निहित हैं। बाद में कबीर के संपर्क ने कई नई जातियों को भी जन्म दिया। यूपी में सतनामी और रैदासी चमार और गवली, गुनमार और माली, दक्षिण में लिंगायत आदि कबीर के संपर्क की संतान हैं। कहा जाता है कि द्रविड़ों में पाक जाति कबीर के संपर्क से उत्पन्न हुई।(9)

उस समय शूद्र दयनीय जीवन व्यतीत करते थे। हालाँकि बौद्ध, शैव और शाक्त ने उनके प्रोत्साहन के लिए मार्ग खोल दिया था, फिर भी आम जनता अपने साम्यवादी पैटर्न से अछूती रही। इस काल के सबसे लोकप्रिय पंथ)) समर्ता (ने शूद्रों को बहुत परेशान किया। उत्तर भारत में प्रसिद्ध वैष्णव संत और उपदेशक रामानुज ने शूद्रों को साल में एक बार धार्मिक मंदिरों में जाने की अनुमति दी, पहली बार रामानंद ने इस उदारता में एक और क्रांतिकारी बदलाव लाया। उन्होंने अपने 'रामावत' संप्रदाय में सभी जातियों को बिना किसी जाति और पंथ के भेद के स्वीकार किया, यह हिंदी साहित्य के इतिहास में 'संता' परंपरा का एक स्वर्णिम काल था।

तुलसीदास की ये पंक्तियाँ तत्कालीन सामाजिक जीवन की एक धुंधली तस्वीर प्रस्तुत करती हैं। वेदों ने अपना महत्व खो दिया था। ब्राह्मणों ने अपने निर्धारित कर्तव्यों की उपेक्षा की थी। जातियों की वृद्धि दर तेज थी। निचली जातियों में अपमान की भावना और उच्च जातियों का दबाव प्रति-प्रतिक्रिया की भावना पैदा कर रहा था। इस्लाम ने इस प्रति प्रतिक्रिया में बहुत कुछ जोड़ा, जातिविहीन और वर्गहीन संप्रदाय और पंथ निम्न जातियों के लोगों के लिए बहुत संतुष्टि का स्रोत थे, जिन्होंने संन्यासी की आड़ में ऐसे ब्राह्मणों द्वारा पूजा की जाने की मांग की, जो पारिवारिक हलकों में जीवन व्यतीत कर रहे थे। जातियों के मिश्रण के अलावा सामाजिक संबंध टूट रहे थे। इन सबके बावजूद धीरे-धीरे एक सामाजिक जागृति हो रही थी। यह मुसलमानों के लिए अपमानित जातियों को इस्लाम में परिवर्तित करने का एक सुनहरा अवसर था। 'नाथ पंथ' के पारंपरिक तरीकों में तेजी से बढ़ रही थी पवित्र पुस्तकों के प्रति लापरवाही(10)

जातियों और पंथों के भेद के कारण सामाजिक जीवन अंधविश्वास का आसान शिकार हो गया था। रूढ़िवादी, हिंदू शूद्रों और अन्य अनुसूचित जातियों की छाया से भी नफरत करते थे। ऊँची जातियाँ भी अपनी झूठी परम्पराओं के कारण अंधविश्वास का शिकार हो गई थीं। हिंदुओं के अंध विश्वास की आलोचना करते हुए मार्कोपोलो ने कहा है, "उन्हें ज्योतिष, काला जादू, शुभ मंत्र आदि में पूर्ण विश्वास था, जिनका संबंध शैतानी कला से है। गुजरात के ब्राह्मण रूढ़िवादी मूर्तिपूजक थे।"

पर्दा प्रथा, बाल विवाह, दास प्रथा आदि और कई अन्य कुरीतियाँ थीं। कई दुष्ट तथाकथित धर्म प्रचलित थे जैसे कि जीव हिंसा, मांसाहार, शराब पीना, दुराचार, वेश्यावृत्ति आदि। कठिन समय और आत्मविश्वास की कमी के कारण सामाजिक जीवन) विशेषकर हिंदुओं (का मानसिक और नैतिक स्तर गिर गया था। कबीर की नजर में आदमी ने सबसे नीचे तक छू लिया था। मनुष्य लोभ या लोभ और चापलूसी के जाल में फँस गया। उच्च सिंहासन धर्मों में संत भी लोभ और चापलूसी के आसान शिकार थे। दूसरों पर निर्भरता बढ़ती जा रही थी। इस नीच, बदसूरत, दयनीय और सबसे खराब स्थिति को देखकर कबीर को बहुत पीड़ा हुई। कबीर ने अपने प्रभावी शब्दों का इस्तेमाल गंभीर रूप से आलोचना करने और हर कमजोरी को दूर करने के लिए किया।

महिलाओं का स्थान

कबीर स्त्रियों के प्रति बहुत नरम नहीं थे। समकालीन समाज में महिलाओं की सच्ची तस्वीर को चित्रित करने में उनकी कोई दिलचस्पी नहीं थी। फिर भी महिलाओं की वास्तविक स्थिति के बारे में कुछ बिखरे हुए संकेत उनके कार्यों से एकत्र किए जा सकते हैं। जिस प्रकार तुलसीदास समाज में नारी के वास्तविक स्थान को" जिमी स्वतंत्र हो बड़ीरही नारी "कहकर प्रकट करते हैं, उसी प्रकार कबीर न केवल उनके स्वभाव पर बल्कि समकालीन समाज में उनकी स्थिति पर भी यह कहकर प्रकाश डालते हैं(11)

www.ignited.in

"को-मणि कली नागनी "कबीर ने नारी लोक के प्रति तिरस्कार की भावना जगाने का प्रयास किया था और तुलसीदास उनके स्वतंत्र आंदोलन के विरुद्ध थे।

यह बिल्कुल सच है कि उस उम्र में महिलाओं को अपमानित नहीं किया जाता था, फिर भी उनकी स्वतंत्र आवाजाही पर एक सीमा थी। मुसलमानों के आगमन ने पुरदा प्रणाली को उपयोग में लाया कबीर ने इसे क्रांतिकारी सुधारकों की आंखों से देखा। पुरदा प्रथा ने कबीर को इतना चिढ़ाया कि उन्होंने इन आध्यात्मिक शब्दों में अपनी तीव्र अस्वीकृति व्यक्त की:

"राहु राहु री बहुरिया घुंघट जिनी वोरह

घूंघट करी गई तेरे आगे,

उनाकी गेल तो जिनी भागे"।

उन दिनों महिला लोक शिक्षा प्राप्त करती थी। इब्नबतूता ने कई ऐसी संस्थाएँ देखीं जिनमें स्त्रियों को शिक्षा दी जाती थी। इसके बावजूद उनकी स्वतंत्रता सीमित थी। अविवाहित लड़कियों को कबीर ने भी अपने व्यक्तित्व के सौंदर्यीकरण की अनुमति नहीं दी थी।(12)

उस काल में हिन्दू स्त्रियों की स्थिति और भी दयनीय थी। सुंदर लड़कियों को उनके परिवारों के लिए शाप दिया गया था।(13)

कबीर के जन्म के समय भारत में मुस्लिम शासन पूरी तरह से स्थापित हो चुका था। धार्मिक रूढ़िवाद उस समय एक नया आकार ले रहा था। कबीर ने संयमित मन से सभी पहलुओं पर अपनी दृष्टि डाली। उन्होंने हर उस चीज की तीखी आलोचना की, जो उन्हें पसंद नहीं थी, और सामाजिक बुराइयों को दूर करने की कोशिश की।(14)

निष्कर्ष

कबीर मानवता और सांस्कृतिक आज़ादी के इतिहास में उस जलडमरूमध्य की तरह हैं जहां मानव मुक्ति बहुत सी पुरानी परम्पराएं आकर ठहर जाती हैं और बहुत सी नई परम्पराएं आगे बढ़ती हुई आधुनिक विचारों के निर्माण में घुल-मिल जाती हैं। आज सामाजिक सद्भाव, भाईचारा और सांप्रदायिक एकता जैसे किसी भी मुद्दे पर बुद्ध या उनके अनुयाइयों को उतनी सहजता से नहीं लाया जा सकता जितनी सहजता और सप्राणता से कबीर को लाया जा सकता है। ऐसा क्यों है? जबकि बुद्ध ने बहुत पहले जन्म, जीवन, जाति, स्वर्ग, नर्क, पुनर्जन्म, पाप, पुण्य, पृथ्वी जैसे मुद्दों पर अपनी बातें कह दी थी।(14) अतः कबीर एक स्वतंत्र विचारक थे। उन्होंने अपने जीवन के अंत तक अपनी अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता को बनाए रखा। कबीर ने कभी भी 'सती प्रथा' का विरोध नहीं किया, इसके बावजूद उनमें निष्पक्ष लिंग के प्रति सम्मान की भावना नहीं थी। कबीर ने हर तरह के झूठे दिखावे का विरोध किया। वह जीवन की वास्तविकता को ही महत्व देते थे। निर्धारित कर्तव्यों का पालन करना और सत्य के मार्ग पर चलना कबीर की एकमात्र महत्वाकांक्षा थी।

संदर्भग्रंथ सूची

1. दासगुप्ता, मृणाल, "वैदिक साहित्य में ग्रैधा और भक्ति", भारतीय ऐतिहासिक तिमाही 1930।
2. ग्रियर्सन, जी.ए.'भक्ति मार्ग", एम ई, खंड II, 1909* यूरोपियन थॉट इन द अट्ठारहवीं सदी में मोंटेस्क्यू से लेसिंग तक, जे. लेविस मे द्वारा अनुवादित, हॉलिस एंड कार्टर, लंदन 195यू।
3. भारती, कंवल. "कबीर के 'निर्गुणवाद' ने अम्बेडकर को प्रभावित किया", फॉरवर्ड प्रेस। 1 जुलाई 2017, 12 मई 2018 को एक्सेस किया गया
4. झिंगरन, सरल। (2018) "कबीर और गांधी मानव एकता के प्रेरितों के रूप में, धर्म और जाति आधारित भेदभाव को पार करते हुए",
5. मार्ग, वॉल्यूम। 32, नंबर 3, (अक्टूबर-दिसंबर 2010), 5 जून 2018 को एक्सेस किया गया।
6. माधव मुक्तिबोध, गजानन। "मध्ययुगीन भक्ति आंदोलन का एक पहलू", आलोचना, नवंबर, 2013
7. प्रागलाब, मार्तंड। "संतो धोखा कासु कहियो", तिरचिस्पेलिंग वर्डप्रेस, 20-06-2012
8. रोलैंड स्टाल, 'द फिलॉसफी ऑफ कबीर', फिलॉसफी ईस्ट' और पश्चिम, वॉल्यूम। 4, नंबर 2 (जुलाई।, 1954), पी। 149.
9. शर्मा, मुंशी राम, भक्ति का विकास, भवन, बनारस 1958#
10. पांडे, रामनिरंजसफ्लक्यूई, रामभक्ति शाखा, नवाहिंडा प्रकाशन, हैदराबाद।960।
11. नारद भक्ति-सूत्र पाठ अंग्रेजी अनुवाद के साथ हैंडलल सिन्हा द्वारा, भारतीय प्रेस, इलाहाबाद 1911#
12. यहेजकेल, इसहाक। 2003. कबीर महान रहस्यवादी। सावा सिंह, बुद्धस्वामी सत्संग ब्यास डेराबोड़ाजयमल सिंह। पंजाब छठा संस्करण:
13. http://ignca.gov.in/coilnet/kabir011.htm

www.ignited.in

14. https://www.forwardpress.in/2020/06/kabir-jayanti-2020-hindi/

Corresponding Author

Lalithamma M.*

Research Scholar, Arunodaya University